यशपाल 2

प्रारंभिक जीवन:-

यशपाल का प्रारंभिक जीवन संघर्षपूर्ण , कष्टकारी व अभाव पूर्ण था। उनका आत्मकथन है-" मैं सजा समाप्त होने के दस साल पहले ही छूट गया था। तो मेरे सामने किसी वाद या पार्टी की समस्या नहीं थी। समस्या थी रोटी , कपड़ा और मकान की। हमारे पास सिर छुपाने के लिए जगह तक नहीं थी। जेल से छूटने के बाद मैं किसी बड़े आदमी के दरबार में नहीं गया, जैसी की उम्मीद कुछ लगाए बैठे थे। मैंने और रानी ने मिलकर नगण्य साधनों के बल पर हस्तकला को स्वीकार किया।... आप नहीं जानते हम दोनों ने मिट्टी और कागज के खिलौने बनाए... जूतों पर लगाने वाली पॉलिश बनाई- बेची। "(5)(धर्मयुग, 26जनवरी, 1977 पृष्ठ 32)   श्री रूपनारायण पांडे का कथन है-" शोषण से ऊपर उठी हुए उनकी नुकीली नाक, चिबुक और सघन अक्ष पलके उनकी गटरी आंखों पर छाई है । केश पक चुके हैं । चिंतन के लैंस के भीतर से उनकी गहरी आंखों ने विराट के लिए महान और लघु के लिए महानतम विचार -ज्योति की दृष्टि -रेखा समाज से सदा अंकलित की है। शोषण से उनकी अस्थियां निकल आई हैं।" (6) (रूपनारायण पांडे, यशपाल की दिव्या, आमुख पृष्ठ से उद्धृत) यशपाल ने अपनी धर्म पत्नी के सहयोग से अपनी संतति के लिए भौतिक जगत की सभी सुविधाएं अर्जित की तथा विकट परिस्थितियों से जूझ कर अपने वर्तमान और आगत का नवनिर्माण किया था । मधुरेश के शब्दों में -" बढ़ती उम्र के बावजूद अच्छे ढंग से सिले उम्दा कपड़े, खूब साफ सुथरी बड़ी कोठी, मोटर , फ्रिज , यानी ऐशो-आराम की हर चीज उनके यहां है । #### यशपाल ने इन्हें जरूरत से ज्यादा महत्व नहीं दिया । ये चीजें इनके लिए ना तो कभी स्टेटस सिंबल बनी और ना ही सम्पन्नता के फूहड़ प्रदर्शन का माध्यम । ऐसी चीजें सुविधाजनक और उपयोगी है इसलिए वे हैं।" (7) (मधुरेश, यशपाल के पत्र, पृष्ठ 27)   यशपाल स्पष्टवादी , स्वतंत्र व आधुनिक विचारधारा से प्रभावित थे ।

यशपालः व्यक्तित्व:-

व्यक्तित्व (पर्सनैलिटी) वे विशिष्ट गुण होते हैं जिससे मनुष्य की स्वतंत्र सत्ता सिद्ध होती है।ये गुण व्यक्ति को दूसरों से पृथक कर समाज में अलग पहचान दिलाते हैं। व्यक्ति की विचारधारा , व्यवहार इत्यादि उसके व्यक्तित्व की देन हैं। मानक हिन्दी कोश के अनुसार : " व्यक्तित्व व्यक्त होने की विचा अवस्था या भाग है। किसी व्यक्ति की निजी विशिष्ट क्षमताएं , गुण , प्रवृत्तियां आदि जो उसके उद्देश्य, कार्यों व्यवहार में प्रकट होती है और जिनसे उस व्यक्ति का सामाजिक स्वरूप स्थिर होता है।" (8) (रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, पृष्ठ 124) विभिन्न भारतीय और पाश्चात्य विचारकों द्वारा व्यक्तित्व की भिन्न - भिन्न परिभाषाएं दी गई हैं यथा-

जी डब्ल्यू आलपोर्ट के अनुसार -"व्यक्तित्व व्यक्ति की उन मनोशारीरिक पद्धतियों का वह आंतरिक क्रियात्मक संगठन है , जो पर्यावरण से उसके विशेष प्रकार के समायोजन को निर्धारित करता है।" (9) (डा नरेश कुमार, यशपाल के उपन्यासों में मध्य वर्ग , पृष्ठ 2 पर उद्धृत) विलियम जेम्स ने मनोविज्ञान के आधार पर माना कि वेशभूषा , शारीरिक , मानसिक शक्तियों के अतिरिक्त जिन चीजों को मनुष्य अपने से जोड़कर देखता है (परंपरागत संस्कार एवं पारिवारिक व सामाजिक परिवेश , व्यक्ति के बाह्य और आंतरिक गुण , आचरण -व्यवहार) वे सब उसके व्यक्तित्व के अंग होते हैं। - "व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक शक्तियों को ही नहीं , अपितु उसकी वेशभूषा सहित उन समस्त वस्तुओं के कुल योग को , जिसे वह व्यक्ति अपनी समझता है आत्म (self) की संज्ञा दी जानी चाहिए"(10) (Philip Lawrence, Encyclopaedia of psychology , page 456) व्यक्तित्व के संबंध में राजेंद्र यादव का कथन है -" कलाकार का व्यक्तित्व, उसका परिचय, उसका विश्वास और उसकी प्रतिबद्धता सभी कुछ उसकी कला होती है " (11) (राजेंद्र यादव, औरों के बहाने, पृष्ठ 133)

यशपाल के व्यक्तित्व को संपूर्णता मे समझने के लिए उनके जीवन के विभिन्न पक्षों का विवेचन अनिवार्य है। यशपाल मितभाषी , विनम्र , चित्रकार, मदिरा और सिगार के शौकीन, स्पष्टवादी प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उनकी अनेक रचनाओं के मुखपृष्ठ उनके बनाए चित्रों से सजे हैं।

वे सबके साथ एक जैसा व्यवहार करते थे , अपने ड्राइवर प्रमोद को उन्होंने मरते दम तक भूल से भी कभी ड्राइवर कह कर नहीं पुकारा । संध्याकाल मित्र मंडली के साथ कॉफी हाउस में कॉफी पीना , हंसी मजाक करना उन्हें विशेष प्रिय था । उनके उपन्यासों , कहानियों , व पत्नी

को लिखे पत्रों में यशपाल के फूलों के प्रति प्रेम को महसूस किया जा सकता है। उदाहरणार्थ यह बात जानकर तुम्हें कितना आश्चर्य होगा कि मेरे कुछ क्राइसेयेमम (गुलदाउदी) इसी गर्मी में भी फूल रहे हैं लेकिन ये लाल है, सफेद या बसंती देहरादून जैसे नहीं। अच्छी सुगंध का तो मुझे तुम जानती हो कितना शौक है" (12) (सारिका, 20 जनवरी 1978, पृष्ठ 68) बाह्य व्यक्तित्व मे व्यक्ति की वेषभूषा, रहन सहन, क्रिया कलाप आते हैं। यशपाल घर से बाहर जाते समय पाश्चात्य (सूट बूट , टाई शर्ट और पेंट) और घर में सामान्यत: भारतीय (कुर्ता पजामा) पहनते थे। उनका कथन है- " एक विरोधाभास है कि मैं साधनहीन गरीब की वकालत करता हूं और वेशभूषा,   रहन सहन से आई . सी. एस या उच्च व्यापारी वर्ग का व्यवहार करता हूं । मेरे इस व्यवहार की मनोवृति का आधार यह है कि मैं अपने आप को साधनहीन श्रेणी का अंग समझता हूं और जीवन की सुविधा और शौक में विशेष अवसर और अधिकार प्राप्त श्रेणी के कंधे से कंधा लगाकर अपनी दीनता का विरोध करना चाहता हूं । " (13) (यशपाल , अभिनंदन ग्रंथ , पृष्ठ 29)

यशपाल ने परंपराओं , रुढियों , धार्मिक अंधविश्वासों का खंडन कर अपनी शर्तों पर जीवन जीया । " ### आर्थिक और सामाजिक दबाव से शोषित समाज में उसकी मूल चेतना और उसके जीवन के बीच एक अनुर्वर पठार बना दिया है जहां कोई भी बीज नहीं उगता। लाख जोतिए, बोइए , श्रम कीजिए कोई लाभ नहीं , इसलिए जिन्हें जीवन प्रिय है , जो उसे बदलना चाहते हैं उनका एक मात्र कर्तव्य है उस पठार को तोड़ना , रचना दृष्टि और जीवन के यथार्थ के बीच पड़े धार्मिक अंधविश्वास और परंपराओं की परत को जड़ से उखाड़ फेंकना । " (14) (यशपाल व्यक्तित्व और कृतित्व, डां सरोज गुप्त , पृष्ठ 25 पर उद्घृत) नाटक ' नशे नशे की बात ' (30 अप्रैल 1951 , लखनऊ के छतर मंजिल के विशाल कक्ष में खेला गया) में यशपाल ने शराबी

कामता के रूप में अपनी अमिट छाप छोडी। देवकीनंदन पांडे ने अपने एक संस्करण में लिखा है -" छिद्दू काका के रुप में श्री रघुवीर सहाय और कांता की बहू के रूप में कुमारी दीप्ति पांडे तो सफलता की आशा देने लगे परंतु शराबी कामता के रूप में कोई नहीं जम पाया। अंत में मित्रों के अनुरोध से यशपाल ने यह काम अपने सिर ले लिया। " (15) (यशपाल अभिनंदन ग्रंथ , व्यक्तिगत संस्मरण , पृष्ठ 36)

यशपाल का क्रांतिकारी जीवन:- यशपाल के जीवन पर अंग्रेजों के प्रति घृणा और विद्रोहात्मक मनोप्रवृत्ति , गुरुकुल की शिक्षा , नेशनल कॉलेज के संपर्कागत सहयोगियों (चंद्रशेखर, सुखदेव , भगत सिंह) , पारिवारिक स्थितियों , असंतोषजन्य आर्थिक - सामाजिक वातावरण एवं गांधी जी के नेतृत्व में आरंभ हुए 19 18 के सत्याग्रह आंदोलन का बिना सफल हुए 1921 को समाप्त होने के कारण गहरा प्रभाव पड़ा।अन्ततः ये 1926 को क्रांतिकारी दल में सम्मिलित हो गए। " मैंने अंग्रेजों को सड़क पर सर्वसाधारण जनता से सलामी लेते देखा है। इसे अपना अपमान अनुभव किया और उसके प्रति विरोध अनुभव किया।" (16) (सिंहावलोकन , प्रथम भाग , पृष्ठ 42) इनके क्रांतिकारी रूप से प्रभावित होकर संत इंद्र सिंह ने लिखा है -" 1942 के दिन थे। पहले पहर में यशपाल से उनके साहित्यकार होने के नाते नहीं वरन क्रांति की दीक्षा देने वाले के नाते मिला था और मेरा उद्देश्य उनसे बम बनाने का नुस्खा लेना था।" (17) (यशपाल अभिनंदन ग्रंथ , पृष्ठ 40) समय प्रवाह के साथ 19 28 में यशपाल ने लॉर्ड इरविन की स्पेशल ट्रेन के नीचे बम विस्फोट का आयोजन करना , दिल्ली और रोहतक में बम निर्माण आदि जैसी महत्वपूर्ण क्रांतिकारी गतिविधियों में अपना योगदान दिया। यशपाल के क्रांतिकारी संगठन का लक्ष्य "सामूहिक सशस्त्र क्रांति के माध्यम से अपने देश से विदेशी सत्ता का उन्मूलन करना था"। इन्होंने 19 28 में " हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ " की स्थापना की और स्वयं को समाजवादी और मजदूर श्रेणी का नेता माना। भगत सिंह , सुखदेव , राजगुरु तथा भूपेंद्र नाथ के नारों में (फांसी के समय) इन्हीं भावनाओं की अनुगूंज सुनायी देती है।

"इंकलाब जिंदाबाद "

"साम्राज्यवाद का नाश हो"

" संसार के मजदूरों एक हो"

यशपाल के क्रांतिकारी कार्यों....

अपने स्वत्व को पाने के लिए यशपाल शस्त्राधारित क्रांति के पक्षधर थे। उन्होंने ' दादा कामरेड' में क्रांतिकारियों के जीवन लक्ष्य , और नारों को अपना वर्ण विषय बनाया। जे. पी. सैंण्डर्स और स्काट द्वारा पंजाब केसरी लाला लाजपत राय की हत्या से इस क्रांतिकारी दल में क्रोधाग्नि भड़क उठी अतः 17 दिसंबर 1928 को लाहौर में डी. ए. वी कॉलेज के सामने राजगुरु और भगत सिंह ने सैंण्डर्स की गोली मारकर हत्या कर दी। क्रांतिकारी सदस्यों की सहायतार्थ धन एकत्र करने का दायित्व यशपाल का था। (18) (देखिए, सिंहावलोकन , प्रथम भाग , पृष्ठ 163 , 164) यशपाल ने लौहोर बैंक डकैती में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई किंतु यह योजना असफल रही। इसके उपरांत 'हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ' ने विधानसभा में बम फेंकने का निश्चय किया। 8 अप्रैल 1928 को भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने असेंबली में बम विस्फोट किया तथा गोरे सार्जेण्ट के हाथों गिरफ्तार होकर हाई कोर्ट में अपने उद्देश्यों और क्रांति को स्पष्ट किया। कालान्तर में यशपाल ने अपने अन्य सहयोगियों जय गोपाल , किशोरी लाल , भगवती चरण वोहरा आदि के साथ मिलकर लोहार में बम बनाने की फैक्टरी खोली किंतु खुफिया पुलिस के छापे के कारण उन्हें वहां से भागना पडा। एकांतवास मे कशमीर मे भी यशपाल डलझील के किनारे बम के मसाले की विधि तैयार करते रहते थे। इसी समय उन्होंने आस्कर वाइल्ड के नाटक ' वीरा दी निहिलिस्ट ' और लुईफिशर की पुस्तक ' गांधीऔर लेनिन ' का हिंदी अनुवाद किया। फिर उन्होंने दिल्लीऔर रोहतक मे बम बनाने शुरू कर दिए। सन् 1929 को यशपाल ने वायसराय की गाड़ी के नीचे बम रखा पर अत्यधिक कोहरा होने से बटन ठीक से ना दबने से वायसराय बच गए। (19) (

देखिए , सिंहावलोकन , द्वितीय भाग, पृष्ठ, 64, 65 , 66) दल के नियमों के विपरीत यशपाल ने दल की सक्रिय सदस्या प्रकाशवती कपूर से प्रेम किया , परिणामस्वरूप दल ने इन्हें प्राणदंड देने का निश्चय किया।श्री कैलाशनाथ द्विवेदी ने इस संदर्भ मे बताया है कि -" यशपाल ने पार्टी के नियमों के खिलाफ श्रीमती प्रकाशवती के साथ प्रेमसंबंध स्थापित कर लिया था। पार्टी ने उसको मृत्युदंड दे दिया था। कानपुर मे 58 बोर के एक फ्रेंच पिस्तौल और छोटी एक नलीगन के साथ मुझे उस आदेश को कार्यान्वित करने के लिए कहा गया।" (20) (यशपाल व्यक्तित्व-कृतित्व , डॉक्टर सरोज गुप्ता , पृष्ठ 15 पर उद्‌घृत) फरवरी , सन् 1932 को पुलिस पर गोली चलाने और बिना लाइसेंस के हथियार रखने के कारण यशपाल को 14 वर्ष का दंड मिला। यहीं 7 अगस्त 1936 को (प्रकाशवती के आग्रह पर , जेल में ही) यशपाल का विवाह प्रकाशवती के साथ हुआ। यशपाल ने समय का सदुपयोग करते हुए जेल मे बांग्ला, फ्रेंच और इटालियन भाषाओं का अध्ययन किया तथा अनेक कहानियों (पिंजरे की उडान, कहानीसंग्रह की अधिकांश कहानियां) और निबंधों की रचना की। जेल से रिहा होकर यशपाल ने ' साथी प्रेस ' और ' विप्लव ' कार्यालय खोला , इसमें यशपाल की पुस्तकों के अतिरिक्त ' उत्कर्ष ' पत्रिका और अन्य स्कूली पुस्तकों का प्रकाशन होता था।

यशपाल साहित्यिक व्यक्तित्व :- वेदना और कष्ट की तपोभूमि में तपकर कुंदन बना यशपाल का व्यक्तित्व उनकी रचनाओं में बिखरा मिलता है। उनका साहित्य और क्रांतिकारी व्यक्तित्व एक दूसरे के साथ चलते हैं। साहित्य लेखन की प्रेरणा यशपाल को अपने प्राध्यापक उदयशंकर भट्ट से मिली। इसके अतिरिक्त गणेश शंकर विद्यार्थी ने ' प्रभा ' और ' प्रताप' जैसी प्रमुख पत्रिकाओं में उनकी रचनाओं का प्रकाशन कर उन्हें प्रोत्साहित किया। कुशाग्र बुद्धि यशपाल ने आर्य समाजी लजवन्तराय के घर जाकर चंद्रकांता संतति, शरद के बांग्ला के उपन्यासों के अनुवाद , अनेक बंगाली क्रांतिकारी चरित्र , स्त्री सुबोधिनी , सत्यार्थ प्रकाश आदि का अध्ययन किया। इन्होंने

अपना साहित्यिक जीवन कहानीकार के रूप में प्रारंभ किया और उपन्यास के क्षेत्र में विशेष ख्याति अर्जित की।

राजनीतिक आर्थिक विचारधारा....

" समाज में शासन के अनेक रूप समय और परिस्थिति के अनुसार दिखाई पड़ते हैं। मार्क्सवाद के विचार में शासन का रुप और प्रकार समाज के जीवन के ढंग , उसमें मौजूद उत्पत्ति के साधनों और श्रेणियों के आर्थिक संबंधों के आधार पर निश्चित होता है।" (21) (मार्क्सवाद , पृष्ठ 55) यशपाल शोषण मुक्त ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जहां व्यक्ति -व्यक्ति में किसी भी प्रकार का भेदभाव ना हो , अतः उन्होंने कम्युनिज्म को स्वीकार किया। उनके अनुसार " मैं कम्युनिज्म को सर्व साधारण जनता के मुक्ति का वैज्ञानिक विचारधारा समझता हूं , इसलिए कम्युनिज्म से अपना संपर्क स्वीकार करता हूं। अपनी संपूर्ण शक्ति को उस 'वाद' के प्रति 'देय' स्वीकार करने में मुझे कोई संकोच नहीं। " (22) (यशपाल , देखा सोचा समझा , पृष्ठ 113) उनके अनुसार समाज में संता का आदर्श होना अनिवार्य है जिससे सबको अपने विकास और उन्नति के अवसर मिल सके और उनमें आत्मनिर्णय की शक्ति आए। " प्रत्येक को अपने विकास और उन्नति तथा जीवन निर्वाह के उपायों की प्राप्ति के लिए समान अवसर हो और प्रत्येक व्यक्ति को अपने परिश्रम का फल पाने का भी सामान अवसर हो और समाज के शासन और व्यवस्था में भाग लेकर आत्म निर्णय का समान अधिकार हो। " (23) (मार्क्सवाद, पृष्ठ 69)यशपाल की विचारधारा को उनके उपन्यासों दादा कामरेड , झूठा सच , पार्टी कामरेड , देशद्रोही, मेरी तेरी उसकी बात आदि उपन्यासों में सहजता से देखा जा सकता है जहाँ उनके पात्र निरंतर संघर्ष करते दिखाई देते हैं। देखा सोचा-समझा' , ' बात -बात मे बात ' आदि निबंध संग्रह में मार्क्सवादी सिद्धांतों की स्पष्ट गूंज सुनाई देती है।